रवि किशन

पटना, बिहार

१

मौन दिल का बढ़ते बढ़ते ज़लज़ला हो जायेगा
ना-ख़ुदा जो आज हैं वो कल ख़ुदा हो जायेगा

ऐ शमा कुछ कद्र कर अब अपने दीवाने की तू
वरना जल कर ये तेरी लौ में फ़ना हो जायेगा

ऐ हवाओ तुम ज़रा कुछ तो अदब से काम लो
शाख से वरना कोई गुंचा जुदा हो जाएगा

इश्क़ तो बस इश्क़ हैं तू इश्क़ से बस इश्क़ कर
रफ्ता रफ्ता ही सही दिल आशना हो जाएगा

तेरे वादों पे अगर यूँ ही यक़ीं करता रहा,
इक़ न इक़ दिन देखना कुछ हादसा हो जायेगा

२

दर्दे दिल अब बाग़वा किसको सुनाए
शाख के ज़ब हो गए पत्ते पराये

अंजुमन में जब निज़ामत ख़ार की हो,
फूल उस महफ़िल में कैसे मुस्कुराये।

दिल्लगी दिल की लगी बन ही गयी जब,
दिल वो अपना फिर कहीं कैसे लगाए।

सर्द मौसम और इक महताब छत पे ,
सब्र कैसे हो, कोई मुझको बताये

जाने ये कैसी कशिश हैं आसमां में
कौन हैं इन बादलों में घर बनाये

गिर गया हो जो नज़र से आप अपनी
किस तरह फिर वो नज़र खुद से मिलाये